Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

समाजशास्त्र का महत्व : एक समीक्षा

अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

शोध सार

समाजशास्त्र के मूल्य, इसके उद्देश्य और इसके अध्ययन से प्राप्त होने वाले लाभ के बारे में पूछना बिल्कुल स्वाभाविक है। पेरेटो जैसे कुछ आलोचक हैं जो इस बात पर जोर देते हैं कि समाजशास्त्र का शायद ही कोई मूल्य है क्योंकि यह जीवन की वास्तविकताओं से संबंधित नहीं है और इसका संबंध केवल उन विचारों से है जो वैज्ञानिक खोजों से रहित होने के कारण सामाजिक जीवन में बहुत कम महत्व रखते हैं। लेकिन समाजशास्त्र के मूल्य के बारे में यह सही दृष्टिकोण नहीं है। समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण अवधारणाओं का अध्ययन हमें विश्वास दिलाएगा कि यह विज्ञान अत्यधिक मूल्यवान है।

संकेत शब्द

समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, सामाजिक समस्याएँ

परिचय

समाजशास्त्र सामाजिक संरचना के भीतर सामंजस्य और व्यवस्था के सिद्धांतों की खोज करना चाहता है, जिन तरीकों से यह एक वातावरण में जड़ें जमाता है और बढ़ता है, बदलती संरचना और बदलते परिवेश का गतिशील संतुलन, निरंतर परिवर्तन की मुख्य प्रवृत्तियाँ, वे ताकतें जो निर्धारित करती हैं किसी भी नींबू पर इसकी दिशा, सामंजस्य और संघर्ष, संरचना के भीतर समायोजन और कुसमायोजन, जैसा कि वे मानवीय इच्छाओं के प्रकाश में प्रकट होते हैं, और इस प्रकार सामाजिक मनुष्य की रचनात्मक गतिविधियों में साधनों का व्यावहारिक अनुप्रयोग समाप्त होता है। समाजशास्त्र भौगोलिक पर्यावरण के कुछ पहलुओं और मानवीय घटनाओं के विपरीत कुछ प्राकृतिक पहलुओं पर भी कुछ ध्यान देता है, लेकिन यह रुचि मनुष्यों और मानव जीवन के उत्पादों के साथ उसकी व्यस्तता के आगे गौण है। हमारे अध्ययन का सामान्य क्षेत्र मनुष्य है क्योंकि वह अन्य मनुष्यों से और अपने आसपास के अन्य मनुष्यों की रचना से संबंधित है।

समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन करता है:

समाजशास्त्र के उद्भव से पहले, समाज का अध्ययन अवैज्ञानिक तरीके से किया जाता था और समाज कभी भी किसी भी विज्ञान का केंद्रीय विषय नहीं रहा था। समाजशास्त्र के अध्ययन से ही समाज का वास्तविक वैज्ञानिक अध्ययन संभव हो सका है।

बल्कि, समाजशास्त्र ने वर्तमान विश्व की कई समस्याओं पर अपना प्रभाव डालने के कारण इतना महत्वपूर्ण महत्व प्राप्त कर लिया है कि इसे सभी सामाजिक विज्ञानों के लिए सर्वोत्तम दृष्टिकोण और वर्तमान स्थितियों के लिए मुख्य

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

अध्ययन माना जाता है। मानव मामलों की स्थिति में किसी भी उल्लेखनीय सुधार के लिए समाज के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान पूर्व-आवश्यकता है।

समाजशास्त्र व्यक्तियों के विकास में संस्थाओं की भूमिका का अध्ययन करता है:

फिर, समाजशास्त्र के माध्यम से ही महान सामाजिक संस्थाओं और प्रत्येक व्यक्ति के साथ उनके संबंध का वैज्ञानिक अध्ययन किया जा रहा है। घर और परिवार, स्कूल और शिक्षा, चर्च और धर्म, राज्य और सरकार, उद्योग और कार्य, समुदाय और संघ, ये महान संस्थाएं हैं जिनके माध्यम से समाज कार्य करता है।

इसके अलावा, वे व्यक्ति के कंडीशनर भी हैं। समाजशास्त्र इन संस्थानों और व्यक्ति के विकास में उनकी भूमिका का अध्ययन करता है और उन्हें व्यक्ति की बेहतर सेवा करने में सक्षम बनाने की दृष्टि से उन्हें मजबूत करने के लिए उपयुक्त उपाय सुझाता है।

समाज की समझ और योजना के लिए समाजशास्त्र का अध्ययन अपरिहार्य है :

समाज अनेक पेचीदगियों से युक्त एक जटिल परिघटना है। समाजशास्त्र के अध्ययन के बिना इसे समझना तथा इसकी विभिन्न समस्याओं का समाधान करना लगभग असंभव है। यह ठीक ही कहा गया है कि हम समाज को उसके तंत्र और निर्माण की जानकारी के बिना न तो समझ सकते हैं और न ही उसमें सुधार कर सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कोई भी व्यक्ति, अपनी इंद्रियों में, एक मोटर कार की मशीनरी और उसके विभिन्न भागों के फिट होने के तरीके के बारे में कुछ भी जाने बिना उसे सुधारने का प्रयास करने का सपना नहीं देख सकता है। एक दूसरे के साथ में.

समाजशास्त्र का सामाजिक समस्याओं के समाधान से वही संबंध है जो कहा जाता है। जीव विज्ञान और जीवाणु विज्ञान का संबंध चिकित्सा या गणित से है और भौतिकी का संबंध इंजीनियरिंग से है। सैद्धांतिक और प्रायोगिक विज्ञान में किए गए शोध के बिना बीमारियों को ठीक करने या पुल-निर्माण की आधुनिक तकनीकें असंभव होंगी। इसी प्रकार, समाजशास्त्र द्वारा की गई जांच के बिना, कोई वास्तविक प्रभावी सामाजिक योजना संभव नहीं होगी। यह हमें सहमत लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए सबसे प्रभावी साधन निर्धारित करने में मदद करता है। किसी भी सामाजिक नीति को लागू करने से पहले समाज के बारे में एक निश्चित मात्रा में ज्ञान आवश्यक है।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि जन्म-दर कम करने की नीति को वांछनीय माना जाता है: इस लक्ष्य को प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन विशेष रूप से आर्थिक संदर्भ में निर्धारित नहीं किया जा सकता है क्योंकि पारिवारिक संगठन, रीति-रिवाजों और पारंपरिक मूल्यों के मामलों को ध्यान में रखा जाना चाहिए और इनकी आवश्यकता है एक समाजशास्त्रीय प्रकार का विश्लेषण।

सामाजिक समस्याओं के समाधान में समाजशास्त्र का अत्यधिक महत्व है:

वर्तमान विश्व अनेक समस्याओं से ग्रस्त है जिनका समाधान समाज के वैज्ञानिक अध्ययन से ही संभव है। यह स्पष्ट है कि सामाजिक बुराइयाँ यूं ही नहीं होतीं और हर चीज़ का अपना कारण होता है।

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

समाजशास्त्र का कार्य वैज्ञानिक अनुसंधान की विधियों द्वारा सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना तथा उनका समाधान खोजना है। मानवीय मामलों का वैज्ञानिक अध्ययन अंततः ज्ञान और सिद्धांतों का भंडार प्रदान करेगा जो हमें सामाजिक जीवन की स्थितियों को नियंत्रित करने और उन्हें सुधारने में सक्षम बनाएगा।

समाजशास्त्र ने हमारा ध्यान मनुष्य के आंतरिक मूल्य और गरिमा की ओर आकर्षित किया है:

समाजशास्त्र मनुष्य के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलने में सहायक रहा है। एक विशाल विशिष्ट समाज में, हम सभी उस संपूर्ण संगठन और संस्कृति की मात्रा तक सीमित हैं जिसे हम सीधे अनुभव कर सकते हैं।

हम अन्य क्षेत्रों के लोगों को करीब से नहीं जान पाते। जिन उद्देश्यों से दूसरे लोग जीते हैं और जिन परिस्थितियों में वे रहते हैं, उनके बारे में अंतर्दृष्टि और सराहना पाने के लिए समाजशास्त्र का ज्ञान आवश्यक है।

समाजशास्त्र ने अपराध आदि समस्याओं के संबंध में हमारा दृष्टिकोण बदल दिया है:

समाजशास्त्र के अध्ययन के माध्यम से ही अपराध के विभिन्न पहलुओं पर हमारा पूरा दृष्टिकोण बदल गया है। अपराधियों के साथ अब पतित जानवरों जैसा व्यवहार नहीं किया जाता। इसके विपरीत, उन्हें मानसिक कमियों से पीड़ित मनुष्य माना जाता है और तदनुसार उन्हें समाज के उपयोगी सदस्यों के रूप में पुनर्वासित करने का प्रयास किया जाता है।

क्रिमिनोलॉजी और पेनोलॉजी और सोशल वर्क और सोशल थेरेपी के विज्ञान जो सामाजिक स्थितियों को समझने और व्यक्तिगत समस्याओं को हल करने में सराहनीय सेवा प्रदान कर रहे हैं, वे समाजशास्त्र के दास हैं।

समाजशास्त्र ने मानव संस्कृति को समृद्ध बनाने में महान योगदान दिया है:

समाजशास्त्र के योगदान से मानव संस्कृति समृद्ध हुई है। इसने हमारे दिमाग से बहुत सारे जाल हटा दिए हैं और सामाजिक घटना को अब वैज्ञानिक ज्ञान और जांच के प्रकाश में समझा जाता है।

लोवी के अनुसार, "हममें से अधिकांश लोग यह आरामदायक भ्रम रखते हैं कि काम करने का हमारा तरीका केवल संभव नहीं तो एकमात्र समझदार है"। समाजशास्त्र ने हमें अपने, अपने धर्म, रीति-रिवाजों, नैतिकताओं और संस्थाओं से संबंधित प्रश्नों पर तर्कसंगत दृष्टिकोण रखने का प्रशिक्षण दिया है। इसने वस्तुनिष्ठ, आलोचनात्मक और निष्पक्ष होना भी सिखाया है।

अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में समाजशास्त्र का अत्यधिक महत्व है:

भौतिक विज्ञान द्वारा की गई प्रगति ने विश्व के देशों को एक-दूसरे के निकट ला दिया है। लेकिन सामाजिक क्षेत्र में दुनिया विज्ञान की क्रांतिकारी प्रगति से पीछे रह गई है। आज दुनिया के सामने लाख टके का सवाल यह है कि यदि मनुष्य एक-दूसरे के खून के प्यासे बने रहेंगे तो सभी तकनीकी विकास और वैज्ञानिक प्रगति का क्या फायदा होगा। समाज पर आधुनिक युद्ध के प्रभाव विविध और गहरे हैं। आधुनिक युद्ध की सामाजिक लागतें कई और प्रभावशाली हैं। यद्यपि युद्ध के विभिन्न कारण हैं, अंतर्निहित कारण राज्यों के राजनीतिक संगठनों और उनके संबंधों के बीच उल्लेखनीय कार्यात्मक असंतुलन है।

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

समाजशास्त्र एक शिक्षण विषय के रूप में उपयोगी है:

इसके महत्व को देखते हुए समाजशास्त्र एक शिक्षण विषय के रूप में भी लोकप्रिय हो रहा है। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में इसे महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है। यह शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में भी देर से विकसित हो रहा है क्योंकि शिक्षक को न केवल अपने विषय और अपने विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से जानने की जरूरत है, बल्कि उस समूह-जीवन को भी समझने की जरूरत है जिसके लिए वह उन्हें फिट कर रहा है। समाज के बारे में ज्ञान के प्रसार से सामाजिक सोच उभरेगी, सामाजिक व्यवहार विकसित होगा, सामाजिक नियोजन को आगे बढ़ाया जाएगा और एक नई सामाजिक व्यवस्था विकसित होगी।

निष्कर्ष:

यह ठीक ही महसूस किया गया है कि समाजशास्त्र के अध्ययन के बिना अपने देश के प्रशासनिक ढांचे में उच्च पद पाने के इच्छुक उम्मीदवारों का प्रशिक्षण और ज्ञान अधूरा और अपूर्ण होगा।

सन्दर्भ:

1. कर्लिंगर, एफएन (1973)। फाउंडेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च, हाफ रोनेहार्टेड विंस्टन, न्यूयॉर्क।

2. Majumdar, P.K. (2005). Research Methods in Social Science, Viva Books Pvt. Ltd., New Delhi.

3. मैट हेन और अन्य: a short introduction to Social Research, Vistaar Publication, नई दिल्ली; 2006

4. न्यूमैन, डब्ल्यूएल (2006). Social Research Methods: Qualitative and Quantitative Approaches (6th Ed.) Pearson Education Inc., New Delhi.

5. Sarantakos, S. (1998). Social Research (2nd Ed.), Palgrave, New York.

6. Seltiz, C.H. (1951). Research Methods in Social Relations, Holt Rine Hart, and Winston.